Received: Apr '22
Revised: Apr '22
Accepted: May '22

© 2022 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

# महर्षि दयानंद सरस्वती : आर्य समाज के मार्गदर्शक सिद्धांत
# MAHARISHI DAYANAND SARASWATI: GUIDING PRINCIPLES OF ARYA SAMAJ

**Ritu Aggarwal**
Assistant Professor, Waheguru College, Abohar, Punjab, India
E-mail: aritu027@gmail.com

**ABSTRACT**

*19 वीं शताब्दी में भारतीय धर्म समाज सुधार आंदोलन में स्वामी दयानंद सरस्वती की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनका महत्व इसलिए और अधिक बढ़ जाता है कि जहां राजा राम मोहन राय व रानाडे ने सुधारवादी तर्क और पाश्चात्य संस्कृति के प्रगतिशील विचारों को इस आंदोलन के लिए आवश्यक बताया, वही दयानंद सरस्वती ने प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा वैदिक विचारों को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए उसके पुनरुत्थान पर जोर दिया।*

*Swami Dayanand Saraswati played an important role in the Indian religious social reform movement in the 19th century. Their importance increases further because while Raja Ram Mohan Roy and Ranade called reformist logic and progressive ideas of western culture necessary for this movement, the same Dayanand Saraswati, considering ancient Indian culture and Vedic ideas as the best, discussed its revival Insisted.*

**Keywords:** Dayanand Saraswati, Renaissance, Vedas, Life, Society, Hinduism.
**मूल शब्द** - दयानंद सरस्वती, पुनर्जागरण, वेद, जीवन, समाज, हिंदू धर्म।

## प्रस्तावना

इस शोध पत्र में हमने भारतीय समाज में सुधार किए जाने की उस जरूरत को रेखांकित किया है जिसे आर्य समाज ने पहचाना था और जिसके लिए उसने काम किया था। 19वीं शताब्दी का धार्मिक और सामाजिक पुनर्जागरण आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। इसने भारतीयों को आत्म निरीक्षण करने के लिए विवश किया। हिंदू समाज का निचला तबका सामाजिक सम्मान व आर्थिक सुविधाओं के लिए ईसाई धर्म को सविकार करने लगा अतः हिंदू धर्म एवं समाज की रक्षा के लिए सुधार की आवश्यकता थी।

आर्य समाज आंदोलन का प्रसार प्राय पश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। हमें यह याद रखना चाहिए कि न तो स्वामी दयानंद ही बल्कि उनके गुरु स्वामी विरजानंद भी पाश्चत्य शिक्षा से प्रभावित हुए थे। ये दोनों ही शुद्ध वैदिक परंपरा में विश्वास करते थे और उन्होंने "पुनः वेदों की ओर चलो " (Back to the Vedas) का नारा लगाया।

*दयानंद सरस्वती के मतानुसार "भारत की आध्यात्मिक परंपरा" पश्चिम के भौतिक वादी विचारों से अधिक श्रेष्ठ है।*

" No reformation is possible
without a renaissance"--------- "Hegal"

## उद्देश्य

### इस शोध के अध्ययन के बाद आप

- समाजिक व आर्थिक व्यवस्थाओं, जिनमें सुधार की आवश्यकता थी, को जान सकेंगे।
- आर्य समाज की स्थापना व उसके नियमों को धार्मिक सुधार आंदोलन के उदाहरण स्वरूप समझ सकेंगे।
- आर्य समाज की शिक्षाएं जान सकेंगे।
- आर्य समाज के योगदान को समझ सकेंगे।
- आर्य समाज का आंदोलन तथा आधुनिक भारत के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

## दयानंद सरस्वती के जीवन की झलक

- दयानंद सरस्वती (उत्तरी भारत का हिंदू लूथर) जी का जन्म 1824 में गुजरात के मोरबी जिले के टंकारा कस्बे के जीवपुर ग्राम में 1824 में ब्राह्मण परिवार में अंबा शंकर जी के यहां हुआ था।
- इन के बचपन का मूल नाम मूल शंकर था।
- इनके पिता जी (अंबा शंकर) शिव भक्त थे।
- 21 वर्ष की आयु में जब इनके विवाह की योजना बन रही थी, ये घर से निकल गए।
- 1860 में दयानंद मथुरा पहुंचे जहां नेत्रहीन गुरु स्वामी विरजानंद के शिष्य के रूप में ज्ञान प्राप्त किया।
- स्वामी विरजानंद से वेदों की दार्शनिक व्याख्या का परिचय मिला।
- स्वामी विरजानंद जी ने गुरु दक्षिणा के रूप में स्वामी दयानंद सरस्वती जी को हिंदू धर्म की कुरीतियों तथा बुराइयों से समाज को मुक्त करने का कार्य सौंपा। इसका स्वामी दयानंद जी ने जीवनपर्यंत तक निर्वाह किया।
- वेदों व भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के पश्चात स्वामी दयानंद जी इस निष्कर्ष तक पहुंचे कि "आर्य श्रेष्ठ जन थे, वेद ईश्वर या ज्ञान है तथा भारत भूमि विशिष्ट भूमि है।"
- दंडी स्वामी पूर्णानंद सरस्वती ने इन्हें सन्यास ग्रहण के बाद स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम दिया।

- बंगाल के समाज सुधारक केशवचंद्र सेन के परामर्श पर उन्होंने अपने विचारों को संस्कृत के स्थान पर हिंदी में व्यक्त करना प्रारंभ किया।
- दयानंद सरस्वती ने अपने विचारों को हिंदी में लिखी "सत्यार्थ प्रकाश" नामक पुस्तक में व्यक्त किया इसमें उन्होंने हिंदुओं को वेद पढ़ने पर बल दिया।
- वेदभाष्य भूमिका (वेदों पर टीका)
- वेदभाष्य (यजुर्वेद और ऋग्वेद पर टीका)

## स्वामी दयानंद का दृष्टिकोण

- स्वामी दयानंद सरस्वती वेदों को "भारत के आधार स्तंभ" के रूप में देखते थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत में विश्वास रखते थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती बहुदेववाद और मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे।

## आर्य समाज की स्थापना

आर्य समाज वैदिक धर्म का एक सुधार आंदोलन है और स्वामी जी 1876 में इंडिया फॉर इंडियन के रूप में स्वराज का आह्वान करने वाले पहले व्यक्ति थे। दयानंद सरस्वती ने 1875 ईस्वी में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की और इसके सिद्धांत व नियम बनाए। 1877 में लाहौर में आर्य समाज की शाखा स्थापित की और लाहौर को मुख्यालय बनाया।

## आर्य समाज का उद्देश्य

आर्य समाज का उद्देश्य प्रगट सत्य के रूप में वेदों और सबसे पुराने हिंदू धर्म ग्रंथों को फिर से स्थापित करना है।अन्य शब्दों में भारत में एक वर्गहीन, जाति विहीन समाज, एक संयुक्त भारत (धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर) और विदेशी शासन से मुक्त भारत हो, जिसमें आर्य धर्म सभी का सामान्य धर्म हो। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को शिक्षित व सच्चरित्र बनाएं। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि 5 वर्ष की आयु से ही बच्चों को संस्कृत, हिंदी तथा साथ ही विदेशी भाषाएं सीखना शुरू कर देना चाहिए। इस तरह उन्होंने त्रिभाषा फार्मूला प्रस्तुत किया। वे यह भी मानते थे कि माता-पिता अपने बच्चों को अनुशासित रखें और विधिवत रूप से सामाजिक प्राणी बनाएं। स्वामी दयानंद सरस्वती लड़कियों व लड़कों दोनों के लिए 8 वर्ष की आयु से गंभीर रूप से शिक्षा दिए जाने के पक्ष में थे, किंतु वे उनके सह शिक्षा संस्थानों के पक्षधर नहीं थे। सभी विद्यार्थियों से आशा की जाती थी कि वह ब्रह्मचर्य का पालन करें। उन्होंने बाल विवाह का दृढ़ता के साथ विरोध किया और कहा कि लड़कियों का विवाह 16 वर्ष तथा लड़कों का विवाह 25 वर्ष की आयु से पहले नहीं किया जाना चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने जो सबसे महत्वपूर्ण व गैर परंपरागत कदम उठाए हैं उनमें से वह एक प्रस्ताव था कि जिन हिंदुओं ने ईसाई व इस्लाम धर्म इत्यादि को स्वीकार कर लिया था उन्हें वापस हिंदू धर्म में सम्मिलित किया जाए।

## आर्य समाज के प्रमुख सिद्धांत

आर्य समाज के सिद्धांतों की जानकारी हमें स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रसिद्ध ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" से मिलती है। आर्य समाज के नियम इस प्रकार हैं:-

- सत्य जब विद्या और जो पर्दाथ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
- ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप ,निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी चाहिए।
- वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।
- सच्चाई को हमें सदैव स्वीकार करना चाहिए और असत्य को ठुकराना चाहिए। समय के अनुसार हमको किसी विचारधारा को मान्यता प्रदान नहीं कर देनी चाहिए।
- मनुष्य के कर्म, सही व गलत की विवेचना करने के पश्चात धर्म के अनुसार करने चाहिए। नियम यह है कि सही कार्य को कीजिए और गलत कार्य से दूर रहिए।
- समस्त व्यक्तियों के साथ हमारे आचरण का आधार प्रेम व सद्भावना का होना चाहिए। संपूर्ण जगत के प्रेम सद्भावना पर आधारित बनने से पृथ्वी पर स्वर्ग की अनुभूति होगी।
- हमें अज्ञानता को समाप्त करने व ज्ञान की बढ़ोतरी के लिए कार्य करना चाहिए। निरक्षरता, अज्ञानता व अंधविश्वास समस्त बुराइयों की जड़ होती है, जबकि ज्ञान द्वारा सर्वव्यापी कल्याण व आनंद की प्राप्ति होती है।
- किसी भी व्यक्ति को स्वयं अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि समस्त मानव जाति की भलाई में स्वयं की भलाई की अनुभूति करनी चाहिए।
- भौतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक रूप से विश्व की भलाई करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।
- समस्त मानव जाति की भलाई के लिए निर्धारित किए गए सामाजिक नियमों का पालन करना सभी व्यक्तियों के लिए अनिवार्य होता है।

## आर्य समाज का योगदान

- आर्य समाज शिक्षा, समाज सुधार व राष्ट्रीयता का आंदोलन था। भारत के 85प्रतिशत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आर्य समाज ने पैदा किए। स्वदेशी आंदोलन का मूल सूत्रधार आर्य समाज ही है
- स्वामी जी ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को पुनः हिंदू बनने की प्रेरणा देकर शुद्धि आंदोलन चलाया।
- आज विदेशों तथा योग जगत में नमस्ते शब्द का प्रयोग बहुत साधारण बात है। आर्य समाजिओ ने एक दूसरे को अभिवादन करने का यह तरीका प्रचलित किया, यह अब भारतीयों की पहचान बन चुका है।
- स्वामी दयानंद ने हिंदी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक तथा अनेक वेद भाष्यो की रचना की। वस्तुतः आर्य समाज द्वारा की गई हिंदी सेवा अद्वितीय है।

- लाहौर में स्वामी दयानंद के अनुयाई लाला हंसराज में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की थी।
- स्वामी श्रद्धानंद जी ने कांगड़ी में गुरुकुल विद्यालय की स्थापना की।
- अनेक आर्य समाज के अनुयायियों ने विदेशों में जाकर हिंदुओं में हिंदी भाषा व स्वतंत्र चेतना का प्रसार किया।
- वैलेंटाइन शिरोल नामक एक अंग्रेज ने इंडियन अनरेस्ट नामक अपनी पुस्तक में तो सत्यार्थ प्रकाश को "ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें खोखली करने वाला" और दयानंद सरस्वती को "भारतीय अशान्ति का जन्मदाता" बताया है।

## निष्कर्ष

स्वामी दयानंद सरस्वती व उनके अनुयायियों ने आर्य समाज के माध्यम से भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान, नवजीवन के निर्माण के क्षेत्र में और राष्ट्रीय जागृति के क्षेत्र में नवीन आंदोलन चलाया। इस शोध पत्र के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि देशवासी भारतीय संस्कृति व धर्म की श्रेष्ठता के बारे में समझने लगे। राजनीतिक स्वतंत्रता के संबंध में उन्होंने लिखा कि "अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य बुरे से बुरे स्वदेशी राज्य की तुलना में भी बुरा है।"

## संदर्भ

1. डॉ मोहनलाल साहू, भारत का इतिहास पृ. सं. 107
2. एस. चंद, आधुनिक भारत का इतिहास, एक नवीन मूल्यांकन पृ. सं. 270, 273, 275
3. महावीर प्रसाद जैन, भारत का इतिहास पृ. सं. 115
4. एस. के पाण्डे , आधुनिक भारत पृ. सं. 185